चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र

अपने बच्चों को . . .

केल्केमिको के

नीम टूथ पेष्ट

का अभ्यास कराइए !

क्योंकि इसमें निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

नीम के दातून में जो जो रोग विरोधी, कृमिनाशक और मसूड़ों को बल देनेवाले द्रव्य हैं, वे सब इस पेष्ट में सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक दन्त स्वास्थ्य शास्त्र में पायोरिया, और मुंह के दुर्गन्ध आदि को रोकने के लिये जो जो उपयोगी और मुख्य रसायनिक द्रव्य बताये गये हैं वे सब इसमें सम्मिलित हैं। मसूड़ों और दांतों के चमक के लिये हानिकारक कोई कठिन पदार्थ इसमें नहीं है। दांतों को स्वस्थ रखने के लिये रोज सुबह व रात को सोने के पूर्व नीम पेष्ट से दांत साफ कीजिये। कुछ ही दिनों में इस प्रणाली का अपूर्व लाभ आप अनुभव करने लगेंगे।

दि कैलकटा केमिकेल कं० लि०

३५, पंडितिया रोड :: कलकत्ता-२९.

शाखाएँ: मद्रास, बम्बई, दिल्ली, पटना, नागपुर, सब जगह बेचा जाता है।

चन्दामामा

विषय-सूची

इनके अलावा

मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर चित्र और कई प्रकार के तमाशे हैं।

ग्राहकों को एक जरूरी सूचना

★

१. ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिए। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न हो उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकता।

२. पता बदल जाए तो तुरन्त नए पते के साथ सूचना देनी चाहिए।

३. प्रति नहीं पाई तो १०-वीं के पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद को आने वाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

—व्यवस्थापक, 'चन्दामामा'

डोंगरे का बालामृत

संपादक : चक्रपाणी

वर्ष 4 :: अंक 1 सितम्बर 52

चन्दामामा को प्रारम्भ किए पूरे तीन साल बीत गए। इस अङ्क से हमारा चौथा साल शुरू होता है। इस शुभ अवसर पर हम पाठकों और हितैषियों के प्रति अपनी हार्दिक शुभ-कामना प्रगट करना चाहते हैं। हमारा हमेशा यही प्रयत्न रहा है कि चन्दामामा में ऐसी शक्ति आ जाए जिससे वह नित नए रूप में पाठकों को ज्यादा से ज्यादा आकर्षित कर सके। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि इस प्रयत्न में हमें थोड़ी बहुत सफलता भी मिली है। इसी उद्देश्य से हम चन्दामामा में हमेशा नए नए शीर्षक प्रविष्ट करते आए हैं। पिछले अङ्क से हमने फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता शुरू की जिसमें पाठकों ने आशातीत अभिरुचि दिखाई। इसके अलावा हम शीघ्र ही और कुछ नए शीर्षक शुरू करने की सोच रहे हैं। आशा है, हमें आगे भी पाठकों की तरफ से वैसा ही सहयोग मिलता रहेगा जैसा कि अब तक हमें मिलता रहा और चन्दा-मामा से पाठकों का सम्बन्ध और भी और दृढ़ सम्मिलित होगा। चन्दामामा नई उमङ्ग और नए हौसले के साथ अपने जीवन के चौथे वर्ष में पदार्पण कर रहा है।

कहना और करना

लोग समझते—रामू बड़ा ही
समझदार लड़का है।
सत्य बोलने में न किसी के
सम्मुख वह झिझका है।

एक रोज उसके यारों ने
अपने मन में ठानी—
'धावा बोलें एक बाग पर
करें खूब मनमानी।'

रामू को भी दिया उन्होंने
न्योता इस अवसर पर।
पर इनकार कर दिया रामू
ने आने से सत्वर।

'माली है गरीब बेचारा'
कह उसने समझाया।
अगणित सदुपदेश देकर भी
उनको रोक न पाया।

बोले मित्र—'अरे बुद्धू! जा!
देखे यों बहुतेरे।
शायद मीठे आम बदा है
नहीं भाग्य में तेरे।'

कह कर यों भागे वे; रामू
रहा देखता उनको।
आती याद पके आमों की,
चैन न आता मन को।

उस सुख की कल्पना मात्र कर
लगी तड़पने जान—
पदवकाश जो खो बैठा वह
कर उसका अनुमान।

‘मैं न गया भी वहाँ, हुआ क्या,
धरे रहेंगे फल क्या ?’
सोचा रामू ने—‘टिकेगा
पल भर मर्कट-दल क्या ?

मैं जाऊँ तो शायद थोड़ी
रोक-थाम कर पाऊँ !
कच्चे फल न तोड़ने दूँ, कुछ
अपना असर दिखाऊँ !’

राम सोच यह दौड़ा दौड़ा
गया बाग की ओर।
यारों में हिल-मिल कर वह भी
बना फलों का चोर।

दौड़ा आया देख उसे भी
लगे यार सब हँसने।
लेकिन उनके तानों की कुछ
की परवाह न उसने।

है उपदेश न कठिन, आचरण
बहुत कठिन है भाई !
कुछ कह कर यदि कर न सको तो
होगी जगत-हँसाई।

मुख – चित्र

नरकासुर बहुत भयङ्कर राक्षस था। उसी ने वरुण का छत्र, अदिति के कुण्डल और मेरु-पर्वत की मणि आदि वस्तुएँ चुरा ली थीं। उसके मारे सारा संसार डर से काँपता था। आखिर देवराज इन्द्र ने भगवान कृष्ण से प्रार्थना की कि वे नरकासुर के चंगुल से देवताओं की रक्षा करें। तब भगवान ने नरकासुर को मारने का निश्चय कर लिया। जब नरकासुर को यह खबर मालूम हुई तो उसने मुरासुर को कृष्ण के विरुद्ध उकसाया।

मुरासुर एक राक्षस था जो प्राग्ज्योतिषपुर का राजा था। उसके पाँच सिर थे और वह देखने में बड़ा भयानक लगता था। जल-स्तम्भन की क्रिया में वह बहुत प्रवीण था। पानी में रहते उसे कोई नहीं जीत सकता था। इसलिए भगवान कृष्ण गरुड पर चढ़ कर आसमान के रास्ते से उसे जीतने गए। उन्होंने निशाना लगा कर एक तीर जो मारा तो मुरासुर नींद से जाग गया और शूल हाथ में लिए, गरजते हुए गुस्से से पानी के ऊपर आया। उसने कृष्ण को देखते ही शूल सम्हाल कर उनकी ओर निशाना लगा कर फेंका। कृष्ण ने तीरों की बौछार करके उस शूल के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तब मुरासुर ने अपनी गदा कृष्ण पर फेंकी। लेकिन कृष्ण ने उस गदा को पकड़ लिया और फिर उसी पर फेंक दिया। यह देख कर मुरासुर खाली हाथ उनकी तरफ उछला। तब भगवान ने सुदर्शन-चक्र का प्रयोग किया और मुरासर पर-कटे, विराट पंछी की तरह पानी में गिर कर मर गया।

मुरासुर के मरते ही ताम्र, अंतरिक्ष, श्रवण आदि उसके सातों बेटे राक्षसों की एक बहुत बड़ी सेना लेकर भगवान पर चढ़ आए। लेकिन वे भगवान का क्या बिगाड़ सकते थे! भगवान ने उन सातों को आसानी से मार डाला और सेना को तितर-बितर करके भगा दिया। जब यह खबर नरकासुर को मालूम हुई तो वह मन ही मन और भी जलने लगा।

वीरू साह बूढ़े हो गए थे। उन्होंने तरह-तरह के कारोबार करके लाखों रुपया कमाया था। किसी चीज़ की कमी न थी। इसलिए अब उन्होंने सोचा कि कारोबार बन्द करके भगवान का नाम लेना ही अच्छा है।

उन्होंने गङ्गा नदी के तीर पर एक सुन्दर महल बनवाया। उस महल के चारों ओर तरह तरह के फूल-पौधे लगवाए। साह के बगीचे में ऐसे ऐसे सुन्दर फूल खिलते थे कि वह देखने में एक नन्दन-वन सा लगता था।

एक दिन साह सवेरे उठ कर बाग में टहलने गए और थोड़ी देर बाद अमराई में एक पेड़ की ठण्डी छांह में अपने चबूतरे पर आकर बैठे। ठण्डी हवा चल रही थी। तरह तरह के फूलों की गन्ध पंछियों के मधुर कल-कूजन में मिल कर सोने में सुगन्ध सी ला रही थी।

साह चबूतरे पर लेट गए और गौर से ऊंची आम की डालों की ओर देखने लगे। ठीक उसी समय एक पंछी उनके सामने की डाल पर आकर बैठ गया। उस पंछी को देख कर उन्हें बहुत अचरज हुआ। क्योंकि वह कोई मामूली पंछी न था। इन्द्र-धनुष में जितने रङ्ग होते हैं सब उस पंछी के बदन पर जगमगा रहे थे। उसके गले के नीचे सोने की एक धारी थी जो चमाचम चमक रही थी।

साह उस पंछी की ओर एकटक देखते ही रह गए। यों कुछ पल बीत गए। अब पंछी अपना स्वर उठा कर गाने लगा। उस के गाने के सामने कोकिल की कूक भी कौए की कांव-कांव सी लगती थी। बस, सुन कर ऐसा लगता था जैसे कोई किन्नरी या गन्धर्व-कन्या इस रूप में पृथ्वी पर आ कर अमृत बरसा रही हो।

विजय कुमार

पंछी ने गाना बन्द कर दिया। साहू चौकन्ने होकर टकटकी लगाए, उसी तरह देखते रह गए। गाना ज्यों ही रुक गया त्यों ही उस पंछी के मुंह से चमकती हुई कोई चीज़ चिनगारियों की तरह ज़मीन पर बिखर गई। यह देख कर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। वे उठ कर उस डाल के नीचे गए जिस पर पंछी बैठा हुआ था। वहाँ ज़मीन पर उगी हुई घनी घास में उन्हें सोने की छोटी छोटी गोलियाँ दिखाई दीं।

यह देख कर साहू के आनन्द का ठिकाना न रहा। उन्होंने वे गोलियाँ चुन कर चुपके से जेब में डाल लीं। जब तक फिर सिर उठा कर डाल की ओर देखा, तब तक पंछी गायब हो गया था। दूसरे दिन वे ठीक उसी समय पर वहाँ आए। लेकिन पंछी उस दिन नहीं आया। इस तरह दस दिन बीत गए। आखिर एक दिन पंछी फिर वहाँ आया और डाल पर बैठ कर गाने लगा। गाना सुनने के बाद साहू ने उस दिन भी सोने की गोलियाँ चुन लीं।

इस तरह हफ़्तों बीत गए। लेकिन वह पंछी फिर नहीं आया। अब वीरू साहू को बड़ी चिन्ता हो गई। क्योंकि उस पंछी के गाने के अलावा उन्हें उसके ज़रिए मिलने वाली सोने की गोलियों का भी मोह हो गया था।

आखिर साहू ने आस-पास के गाँवों में सब जगह घोषणा करा दी कि 'जो कोई उस पंछी को पकड़ कर ला देगा उसे हज़ार रुपए का ईनाम मिलेगा।'

हज़ार रुपए का नाम सुन कर किसे लालच नहीं होता! लोगों ने यह घोषणा सुनते ही पंछी की तलाश करना शुरू कर दिया।

उन्होंने आस-पास के बगीचे ही नहीं, झाड़-झंखाड़ और जङ्गल भी छान डाले।

लेकिन उस पंछी को पकड़ने की बात तो दूर रही; किसी को कहीं उसकी परछाईं भी दिखाई न पड़ी।

फिर भी दुनियाँ में ऐसा कोई काम नहीं जो मनुष्य की लगन से सफल न हो जाए। हाँ, लगन के साथ साथ अगर उसमें सूझ-समझ और चतुरता भी हो तो फिर कहना ही क्या!

बीरू साह के माली में ये सभी गुण मौजूद थे। इसीलिए कष्ट पर कष्ट उठा कर, बड़े प्रयास से उसने सोने के पंछी को पकड़ लिया।

माली जब पंछी को पकड़ लाया तो उसे देख कर साह फूले न समाए। उन्होंने उस पंछी के लिए एक सोने का पिंजड़ा बनवाया और उसे बगीचे में उसी आम की उसी डाल पर टँगवा दिया।

दूसरे दिन उन्होंने पंछी का गाना सुनने के लिए अपने कुछ प्रमुख मित्रों को भी बुलाया। उस पंछी के बारे में साह ने जो आश्चर्य-जनक कहानी सुनाई उस पर मित्रों को सहसा विश्वास न हुआ। इसलिए उत्सुक हृदय से वे सब लोग आकर बाग में इन्तज़ार करने लगे।

लोग आशा लगाए बैठे थे कि पंछी ने अब गाया, तब गाया। लो, यह अब गाना ही चाहता है। लेकिन धीरे-धीरे यों ही साँझ हो गई। अन्धेरा भी हो गया। लेकिन पंछी ने चोंच तक न खोली। पङ्ख भी नहीं फड़फड़ाए।

बेचारे साह की समझ में न आया कि पंछी चुप क्यों है! उन्होंने सोचा कि शायद भीड़ को देख कर पंछी सहम गया है। इसलिए उन्होंने दोस्तों से माफी माँगी और उन्हें विदा कर दिया।

उनके जाने के बाद साह ने सोचा—'मेरा पंछी सोने के पिंजड़े में रहता है।

चुटकी बजाते ही नौकर तरह तरह के मीठे फल लाकर उसे खाने को देते हैं। ठण्डा पानी पिलाते हैं। किसी तरह की तकलीफ नहीं। कोई चिन्ता नहीं। फिर वह गाता क्यों नहीं!' और अन्त में कहा—'वाह! गाएगा क्यों नहीं! कल वह ज़रूर गाएगा!'

इसलिए दूसरे दिन सिर्फ तीन दोस्तों के साथ साहू पंछी के पास आए। वे सभी बड़ी देर तक बैठे रहे। लेकिन पंछी ने मुँह न खोला।

आखिर साहू बहुत झुँझला उठे। यह देख कर उनके एक दोस्त ने कहा—'बेचारा पंछी शायद बीमार हो गया है। नहीं तो वह हिलता-डुलता क्यों नहीं!' तब साहू को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने कहा—'मैंने इसके रहने के लिए सोने का पिंजड़ा बनवा दिया है। इसकी सहूलियत के लिए कोई बात उठा न रखी है! फिर बीमार पड़ने की क्या जरूरत थी! कोई भी पंछी, चाहे वह सोने का ही क्यों न बना हो, इसके अलावा और क्या चाह सकता है!'

फिर उन्होंने अपने नौकरों को बुला कर पिंजड़े को नीचे उतारने का हुक्म दिया। नौकरों ने पेड़ पर चढ़ कर बड़ी हिफाज़त से पिंजड़े को नीचे उतारा और अपने मालिक के सामने लाकर रख दिया।

बड़े कुतूहल से साहू और उसके दोस्त पिंजड़े में झाँक कर देखने लगे। जो देखा, वह काफी था। वे आँखें फाड़ कर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। उनके मुँह से 'यह क्या हुआ!' के सिवा और कुछ न निकला।

तब भी साहू को कुछ शक था। उन्होंने पिंजड़े का दरवाज़ा खोल कर पंछी के शरीर पर हाथ रखा। बस, उनके रोंगटे खड़े हो गए। 'अरे, यह तो ठण्डा हो गया है।' वे बोले।

16

[राक्षस ने राजकुमारियों को गूंगी बना कर जङ्गल में छोड़ दिया। राजा प्रतापसिंह उनको अपने महल में ले गया और उनकी देख-भाल करने लगा। इधर उदय राक्षस के एक रखवाले का भेस बना कर बुरज में गया। उसे देख कर दरवाजे पर पहरा देने वाले शेर उस पर टूट पड़े। दूसरे रखवालों ने उन शेरों को मार कर उसकी रक्षा की। जब राक्षस आया तो उन शेरों को मरा देख कर आग-बबूला हो गया। अब आगे पढ़िए !]

राक्षस चिल्लाने लगा—'किसने यह काम किया है?' उसे अपनी ओर आते देख कर उदय थर-थर काँपने लगा। वह उठ कर कुछ न कुछ बहाना बनाना ही चाहता था कि इतने में राक्षस के नौकर लोग वहाँ आ पहुँचे। उनमें से जिसने शेर को मारा था उसने हाथ जोड़ कर कहा—'मालिक! मैंने ही शेरों को मारा है। वे हमारे हाथों पल कर भी हमीं पर टूट पड़े थे। अगर मैं मौके पर यहाँ पहुँच न जाता तो उस बेचारे की जान कभी न बचती।' उसने अरज किया।

तब राक्षस ने कहा—'अच्छा, ऐसी बात! तब तो तुमने अच्छा ही किया। ये शेर बहुत सिर-चढ़े हो गए थे। बाकी शेरों का खाना-पानी भी एक हफ्ते तक बन्द कर देना! तभी ये सीधी राह पर आ जाएँगे।' इतना कह कर वह वहाँ से चला गया। यह देख कर उदय की जान में जान आ गई। वह चुपचाप लेटा-लेटा सोने

का बहाना कर रहा था। लेकिन कनखियों से देख रहा था कि राक्षस किधर जा रहा है।

दालान के सिरे पर एक बड़े दरवाज़े के पास जाकर राक्षस ने अपनी कमर से एक चाभी निकाली और कुछ मन्त्र पढ़े। तुरन्त वह छोटी सी चाभी बढ़ बढ़ कर सात फ़ुट लम्बी हो गई। राक्षस ने उससे उस दरवाज़े को खोला और कमरे में प्रवेश किया।

उदय के मन में हुआ कि उठ कर देखें, उस कमरे में क्या है? लेकिन पकड़े जाने पर जान की खैर न थी। इसीलिए वह उसी तरह देखता लेटा रह गया।

थोड़ी देर बाद राक्षस बाहर आ गया। उसने फिर यथा-प्रकार दरवाज़ा बन्द कर दिया और चाभी लगा दी। मन्त्र पढ़ते ही चाभी फिर छोटी बन गई और उसे कमर में खोंस कर राक्षस सुरङ्ग के बाहर चला गया।

थोड़ी देर बाद राक्षस के नौकर सभी अपनी अपनी जगह लेट कर खुर्राटे भरने लगे। मौका देख कर उदय चुपके से उठा और उस दरवाज़े के पास गया जिसे राक्षस ने थोड़ी देर पहले खोला था। वहाँ जाकर उसने चाभी के छेद में से अन्दर झाँक कर देखा। उदय को अपनी आँखों पर आप ही विश्वास न हुआ। क्योंकि जिस दाढ़ी वाले का पता न लगाने के कारण वह अब तक हैरान हो रहा था वह उलटे सिर छत से लटक रहा था। लेकिन प्रदीप और निशीथ का कहीं पता न था।

यह देख कर उदय को डर भी लगा और अचरज भी हुआ। उसके भाई कहाँ चले गए? दाढ़ी वाले से पूछने पर पता चल जाता। लेकिन चाभी के बिना दरवाज़ा खोलने और अन्दर घुसने की कोई सूरत न थी। उसे कुछ न सूझा।

दरवाज़े पर उसी तरह थोड़ी देर तक असमञ्जस में खड़े रहने के बाद वह लौट कर अपने बिस्तरे के पास गया और लेट गया। लेकिन भला नींद कैसे आती! वह रात भर इसी सोच में लगा रहा कि कैसे दरवाज़ा खोल कर अन्दर जाए और दाढ़ीवाले से बातें करके अपने भाइयों का हाल जान ले!

सवेरा हुआ। रात को जिन राक्षसों ने सरोवर के किनारे पहरा दिया था वे लौट आए। तुरन्त पहरेदारों का दूसरा जत्था सरोवर की ओर गया। उदय ने सोचा कि राक्षस के नौकरों से पूछने से उस कमरे में जाने की कोई तदबीर बता देंगे। लेकिन तुरन्त एक शक हुआ। ऐसा सवाल करने से वे सोचेंगे कि यह कोई ग़ैर है। तब तो वह पकड़ा जाएगा। इसलिए उदय ने वह ख्याल छोड़ दिया।

एक हफ्ते बाद राक्षस फिर कहीं से लौटा। उसने पहले की तरह कमर से चाभी निकाली, मन्तर पढ़ कर उसको बड़ा बना लिया और दरवाज़ा खोल कर अन्दर घुसा। उदय भी बड़ी सावधानी से उसके पीछे-पीछे अन्दर घुसा। दरवाज़े के नज़दीक ही तीन बड़ी बड़ी हाँडियाँ थीं। उन पर ढकने रखे हुए थे। उदय ने पहली हाँडी का ढकना हटा कर देखा। उसमें कोई आदमी था। उसने झट ढकना बन्द कर दिया। फिर दूसरी हाँडी का ढकना खोल कर देखा। उसमें भी कोई आदमी बन्द था। उसने तुरन्त बन्द कर दिया। जब तीसरी में देखा तो वह खाली थी। झट उदय उसमें बैठ गया और ढकना बन्द कर लिया। उसने पीछे मुड़ कर देखा तक नहीं कि राक्षस क्या कर रहा है।

थोड़ी देर बाद राक्षस उन हाँडियों के पास आया। 'एक!' कह कर निकाले

हुए उसने पहली हाँडी का ढकना खोला। तुरन्त उसमें से एक आदमी खड़ा हुआ। राक्षस ने केश पकड़ कर उसे बाहर खींच लिया। फिर 'दो!' कहते हुए दूसरी हाँडी का ढकना खोला। उसमें से एक आदमी उठ खड़ा हुआ। राक्षस ने उसे भी केश पकड़ कर बाहर खींच लिया। उन दोनों को पकड़ कर राक्षस बाहर चला गया। उसने पहले की तरह दरवाज़ा बन्द कर दिया। फिर उन दोनों को दोनों मुट्ठियों में पकड़ कर उठा लिया और अपनी राह चला गया।

अब उदय ने बिल्कुल देर न की। तुरन्त ढकना उठा कर बाहर आने की कोशिश करने लगा। लेकिन अन्दर कूदना जितना आसान था बाहर आना उतना नहीं था। वह ऊपर आने के लिए उछला। लेकिन कोई फायदा न हुआ। आखिर यों उछलते वक्त एक बार धमाके से गिरा। तुरन्त हाँडी फूट गई और वह बाहर आ खड़ा हो गया।

बाहर आते ही उदय छलांग मार कर दाढ़ी वाले के पास पहुँचा, जो उलटे सिर छत से लटक रहा था। 'यह तुम्हारा क्या

हाल है ! मेरे भाई कहाँ गए ! जल्दी बताओ !' उदय ने उससे पूछा ।

तुरन्त दाढ़ी वाले ने पहचान लिया कि यह और कोई नहीं, उदय ही वेष बदले हुए है ।

'कौन उदय ! घबराओ नहीं ! राक्षस एक हफ्ते तक लौट कर नहीं आएगा । पहले मेरे बन्धन काट दो । मैं तुम्हें सारा हाल बता दूँगा ।' उसने कहा ।

तुरन्त उदय ने दाढ़ी वाले के बन्धन खोल दिए । चैन की एक साँस लेकर वह कहने लगा—'मैने तुम्हें अन्दर आकर हाँडी में झाँकते हुए कभी का देख लिया था । क्या अब भी तुम्हारी समझ में नहीं आया कि उन हाँडियों में कौन बैठे थे ! वे ही तुम्हारे भाई थे ! खैर मनाओ कि उसने तीसरी हाँडी का ढक्कना नहीं हटाया । नहीं तो तुम्हारी जान पर भी आ बीतती ।' वह और भी कुछ कहने जा रहा था कि उदय ने रोक कर पूछा—'क्या ! ये दोनों मेरे भाई थे ! प्रदीप और निशीथ ! तो चलो, पहले उन दोनों को छुड़ा लें !'

इस पर दाढ़ी वाले ने कहकहा लगाया और फिर कहा—'पागल कहीं का ! क्या

तुम समझते हो कि वे अभी तक उसी में बैठे होंगे ! क्या तुमने राक्षस को 'एक-दो' कहते नहीं सुना था ! वह उन दोनों को पकड़ कर अपने साथ ले गया है !'

'कहाँ ले गया !' उदय ने पूछा ।

'मुझे तो मालूम नहीं ! शायद उस सरोवर में रख कर पहरेदारों के हवाले कर गया होगा ।' दाढ़ी वाले ने कहा ।

'अच्छा ! पहले यह तो बता दो कि उसने तुम्हें यों उलटा क्यों टाँग दिया था और मेरे दोनों भाइयों को उसने हाँडियों में क्यों बन्द कर दिया था ! उस दिन तुम

लोगों को सुरङ्ग में ले आने के बाद उसने क्या किया?' उदय ने पूछा।

दाढ़ी वाले ने कहा—'पहले फूटी हाँडी के टुकड़ों को कहीं छिपाने दो। फिर सारा किस्सा सुनाऊँगा।' तब दाढ़ी वाले ने फूटी हाँडी को कहीं छिपा दिया और इतमीनान से कहना शुरू किया—'राक्षस ने सोचा कि हमें तुम्हारा पता मालूम है। पर नहीं बताते हैं। इसलिए उसने धमकाया कि जब तक तुम लोग मुझे उसका पता नहीं बताओगे तब तक तुम लोगों को नहीं छोड़ूँगा और नाक में दम कर दूँगा। लेकिन उसकी बन्दर-घुड़कियों में हम लोग बिलकुल नहीं आए। इस पर उसने हम तीनों को हाँडियों में बन्द कर दिया। लेकिन जब इससे कुछ फायदा न हुआ तो उसने मुझे छत से लटका दिया। फिर भी मैंने कुछ कहने से इनकार कर दिया। मैंने सोचा था कि उन दोनों को भी वह इसी तरह टाँग देगा। लेकिन उसने वैसा नहीं किया। वह उन दोनों को क्यों और कहाँ ले गया, यह मुझे भी मालूम नहीं है।' दाढ़ी वाला बोला।

तब उदय ने भेष बदल कर आने की अपनी सारी कहानी कह सुनाई और यह भी बता दिया कि अजन, भमा वगैरह कहीं खो गए हैं।

तब दाढ़ी वाले ने सुझाया—'उन्हें जरूर उस राजा ने ही चुरा लिया होगा। हमें किसी न किसी तरह यहाँ से भागने और उस राजा के पास जाकर अजन-भमा वगैरह फिर से पाने की कोशिश करनी चाहिए।'

उदय ने भी कहा—'ठीक है।' दोनों बड़ी देर तक माथा-पच्ची करते रहे।

* * *

अब ज़रा उधर चल कर यह भी देखना चाहिए कि माल्व देश के राजा प्रतापसिंह के किले में जुड़वीं बहिनों का क्या हाल है!

उदय जिस सवेरे जाने वाला था, उसी रात को जब वह गाढ़ी नींद में था, राजा प्रतापसिंह ने उसके अस्त्र-भस्म वगैरह चुरा लिए थे। उदय बेचारे को यह बात उस वक्त मालूम न हुई और वह सवेरे उठ कर चला गया। उसके जाने के बाद प्रतापसिंह ने भस्म वगैरह का उपयोग करके राजकुमारियों को पूर्व-वत बना दिया। अब उनमें कोई दोष नहीं रहा। उनकी सुन्दरता देख कर राजा को बहुत आश्चर्य और आनन्द हुआ।

राजा ने उनसे कहा—'तुम लोग मुझसे ब्याह कर लो।' लेकिन राजकुमारियाँ राजी न हुईं। राजा ने कहा-सुना; लेकिन कोई फायदा न हुआ। आखिर उसने उन्हें डराया-धमकाया। इसका भी कोई असर नहीं हुआ। तब राजा को गुस्सा आ गया और उसने लाल-पीला होकर कहा—'तुम लोग मुझसे ब्याह नहीं करोगी तो मैं तुम लोगों को कैदखाने में डाल दूँगा और तब तक उसी में रखूँगा, जब तक तुम अपनी बात पर अड़ी रहोगी।' इतना कह कर उसने उन्हें जेल-खाने में रखने का हुक्म दे दिया। बेचारी राजकुमारियाँ काल-कोठरी में पड़ी-पड़ी अपनी किस्मत को रोने लगीं कि कहाँ से उन पर ये मुसीबतें आ धमकीं!

* * *

उधर राक्षस प्रदीप और निशीथ को सरोवर के किनारे ले गया और बोला—'देखो! मैं तुम दोनों को एक आखिरी मौका देता हूँ! अब भी सच-सच बता दो कि तुम्हारा भाई कहाँ है? नहीं तो पल भर में तुम दोनों के

सिर मुर्दों की तरह उड़ जाएँगे।' यह कह कर उसने अपने नौकरों की तरफ इशारा किया जो हाथ में फरसे लिए वहीं पहरा दे रहे थे।

यह सुन कर प्रदीप और निशीथ एकदम सन्न रह गए। अन्त में निशीथ ने कहा—'हमें यह मालूम नहीं कि वह कहाँ गया। लेकिन हाँ, तुम हमें छोड़ दो तो आशा है कि खोज-ढूँढ कर हम उसका पता ले आएँ! इसलिए हमारी बात पर विश्वास करो और हम दोनों को छोड़ दो! हम लोग शीघ्र ही अपने भाई का पता लगा आएँगे और तुम्हें बता देंगे।'

'वाह! चाल तो तुमने बड़ी अच्छी चली। लेकिन यहाँ तुम्हारी दाल न गलेगी! क्या तुम लोग समझते हो कि मैं पिछली बातें भूल गया हूँ! मुझे कैसे विश्वास हो कि तुम लोग फिर लौट आओगे!' राक्षस ने कहा।

तब निशीथ ने प्रदीप को दिखा कर कहा—'अच्छा, तो तुम इसे यहीं रख लो! तब तो तुम्हें विश्वास हो जाएगा! मैं अपने भाई को छोड़ कर कहाँ जाऊँगा! तब तो मुझे लौट कर आना ही पड़ेगा!'

अच्छा! 'एक बात और सुन लो! क्या तुम जानते हो कि मैं उदय को पकड़ने पर इतना जोर क्यों दे रहा हूँ! अञ्जन-भस्म वगैरह सब उसी के पास हैं! जब तक वे उसके पास होंगे तब तक मुझे चैन न होगा। इसलिए अगर अञ्जन-भस्म वगैरह ला दोगे तो उसे पकड़ लाने की कोई जरूरत नहीं। ज्यों ही तुम यह काम कर दोगे, मैं तुम्हारे भाई को छोड़ दूँगा। समझे!' राक्षस ने कहा।

प्रदीप को भी उसकी बात पसन्द पड़ी। निशीथ तुरन्त वहाँ से चला। राक्षस ने प्रदीप को हंस बना कर सरोवर में डाल दिया और उस पर भी कड़ा पहरा बिठा दिया। [अभी और है।]

सुलेमान एक मशहूर मुसलमान बादशाह था। उसके वज़ीर का नाम था जाफर। जाफर बड़ा काबिल और समझदार आदमी था। गरीबों पर वह बहुत रहम करता था। उनको मुश्किल में देख कर उसका दिल पानी-पानी हो जाता था।

वह अमीरों पर भारी कर लगा कर रुपया वसूल करता और गरीबों की मदद में उसे खर्च कर देता था। इसलिए उस सल्तनत के गरीब सभी जाफर को बहुत मानते थे और उसे 'गरीब का खज़ाना' कहा करते थे।

इस तरह ज्यों-ज्यों गरीब प्रजा जाफर की इज्ज़त करने लगी त्यों-त्यों रईस-अमीर उसे देख कर जलने लग गए। क्योंकि जाफर के मारे अमीर-उमराव सब बड़ी दिक्कत में पड़ गए थे। जाफर के कारण ज़ोर-ज़ुल्म करने का मौका उन्हें नहीं मिलता था। उसके आगे उनकी एक न चलती थी। वे गरीब रियाया का खून चूस कर जो कुछ जमा करते थे, उसे जाफर कर के नाम पर छीन कर शाही खज़ाना भर लेता था। जो लोग बेईमानी करके गरीबों को ठग लेते थे, उन्हें जाफर कड़ी सज़ा देता था। सरकारी नौकर और अफसर भी उसे देख कर बहुत डरते थे। क्योंकि जो लोग रिश्वत खाकर बेइन्साफी करते थे और गरीबों का हक मारते थे उनके लिए वह बहुत सङ्गदिल बन जाता था।

आखिर बादशाह के दरबार के अमीर-उमराव सभी मिल कर जाफर के खिलाफ साज़िश करने लगे और उससे पिण्ड छुड़ाने की तदबीर सोचने लगे।

उन लोगों ने जाफर की गैरहाज़िरी में हर रोज बादशाह के कान भरना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे उनकी बातों

सिराज अली

का असर बादशाह पर पड़ने लगा और उसके मन में जाफ़र के बारे में तरह-तरह के शक पैदा होने लगे।

एक दिन जाफ़र के दुश्मनों ने बादशाह से कहा—'जहाँपनाह! वज़ीर साहब ने अमीरों पर कर लगा कर करोड़ों वसूल किए हैं। वह रकम शाही खज़ाने में पहुँची या वज़ीर साहब के अपने सन्दूक में दुबक गई! क्या हुज़ूर को इसकी कोई खबर है!'

बादशाह चौकन्ना हो गया और फ़ौरन इस की जाँच करने लगा। खज़ाने में उतना रुपया नहीं था जितना होना चाहिए था। होता भी कैसे! जाफ़र ने गरीबों के लिए बहुत सा रुपया खर्च कर डाला था। अब बादशाह गुस्से से भर गया।

खुदगरज़ चापलूसों के कान भरने से वैसे ही उसके मन में जाफ़र के प्रति मैल पैदा हो गया था। अब उसे निश्चय हो गया कि वज़ीर ने सरकारी रुपया हड़प लिया है। उसने तुरन्त सिपाहियों को बुला कर हुक्म दिया—'जाओ! जाफ़र को पकड़ लो और तुरन्त उसका सिर उड़ा दो! उसे मेरे सामने लाने की गुस्ताखी न करना! उसकी लाश को ले जाकर चौराहे पर टाँग देना, जिससे उस को कौए, चील और गीध नोच कर खा जाएँ और फिर कभी किसी को ऐसी नमकहरामी करने की हिम्मत न हो। ऐसे नमकहराम को दफ़नाना भी नहीं चाहिए।' बादशाह का यह फरमान सुनते ही जाफ़र के दुश्मनों का कलेजा ठण्डा हो गया। सिपाहियों ने आधी रात के वक्त जाकर बेफ़िक्र सोते हुए जाफ़र को पकड़ लिया। क्योंकि खुले आम पकड़ने से दङ्गा-फ़िसाद हो जाने का डर था। उन्होंने नगर के बाहर ले जाकर उसका सिर काट लिया और लाश को ले जाकर

चौराहे पर टाँग दिया। राजा की नाराज़गी के खौफ से जाफर के रिश्तेदार और दिली दोस्तों को भी उस लाश के पास जाने की हिम्मत न पड़ी।

अली नाम के एक गरीब आदमी ने जब यह खबर सुनी तो वह धाड़ मार कर रोने लगा और दौड़ा आया उस लाश के पास। 'यह क्या! ऐसे नेक आदमी की यह हालत!' यह कहते हुए वह लाश से लिपट कर रोने लगा।

सिपाही दौड़े आए। उन्होंने अली को बादशाह का फरमान सुनाया और डाँट कर कहा—'भाग जाओ यहाँ से! नहीं तो तुम्हारी भी वही हालत होगी जो इस वज़ीर की हुई।'

तब अली ने कहा—'इस सल्तनत में गरीबों का एक ही सहारा था और वह था जाफर! उस नेक और पाक आदमी की यह हालत हुई! जाफर की मौत नहीं हुई बल्कि इस राज के सभी दीन-दुखियों की मौत हो गई। अब मैं जी कर क्या करूँगा! बादशाह अब मेरा क्या बिगाड़ सकता है! पहले मैं इस महान व्यक्ति की लाश को ले जाकर दफना दूँगा। पीछे तुम लोग जो चाहो सो कर लेना!' यह कह कर उसने सिर को धड़ से लगा कर सी दिया और लाश को कन्धे पर रख कर वहाँ से चलने लगा।

लेकिन सिपाहियों ने उसे घेर कर पकड़ लिया और बादशाह के सामने ले गए।

जब उन्होंने सारा किस्सा सुनाया तो बादशाह के गुस्से का ठिकाना न रहा। उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं—'बेवकूफ! तू मेरा हुक्म तोड़ने चला है! तेरी इतनी मजाल!' उसने कहा।

लेकिन अली ज़रा भी नहीं डरा। उसने कहा—'जहाँपनाह! जाफर 'गरीब का

खज़ाना' था। उसने शाही खज़ाने में से एक कौड़ी भी अपने लिए खर्च नहीं की थी। आप हिसाब-किताब देख लीजिए! आपको खुद मालूम हो जाएगा कि उसने सारी रकम मुझ जैसे गरीबों के लिए खर्च की है। ऐसे नेक आदमी को आपने मरवा डाला। इतना ही नहीं, आप उसकी लाश की भी बेइज़्ज़ती करा रहे हैं!'

अली के मुँह से ये बातें निकलते ही बादशाह घबरा कर सोचने लगा कि 'कहीं मैंने बेकसूर की जान तो नहीं ली!'

उसने फिर से सरकारी खर्च की जाँच का हुक्म दिया। अन्त में साबित हुआ कि अली का कहना ठीक है।

बादशाह ने अपना गुनाह कबूल कर लिया। उसने अली से कहा—'तुम जाफ़र की बहुत बड़ाई कर रहे हो! मालूम होता है, वह तुम्हें खूब खैरात देता था। आओ, मैं तुम्हें इतना रुपया दिला दूँगा कि हमेशा के लिए तुम्हारी गरीबी दूर हो जाएगी। लेकिन एक बात याद रखो! फिर कभी जाफर का नाम न लेना। आज से तुम मेरी तारीफ करना। क्योंकि मैं इस मुल्क का बादशाह हूँ।' यह कह कर उसने एक हज़ार अशर्फियाँ मँगाईं और अली को दिला दीं।

अली ने अशर्फियाँ लेकर ज़मीन पर रख दीं। उसकी आँखों से आँसू बह चले।

बादशाह ने उससे कहा—'बोलो! और क्या चाहते हो?'

यह सुन कर अली ने दोनों हाथ आसमान की ओर पसार कर कहा—'जाफ़र! तुम सचमुच 'गरीब का खज़ाना' हो! तुम मर जाने पर भी इस गरीब को नहीं भूले! देखो! तुम्हारी ही कृपा से बादशाह मुझे ये अशर्फियाँ दे रहे हैं। शुक्रिया!' यह कह कर वह जाफर के गुण गाने लगा। शरम के मारे बादशाह का सर झुक गया।

आंध्र देश के प्रसिद्ध कवि और सन्त वेमना हमेशा एक मन्दिर के सामने आसन लगाए बैठे रहते थे। साँझ को गाँव के बहुत से लड़के उनके चारों ओर जमा हो जाते और कहने लगते—'कहानी सुनाओ!' सन्त वेमना ज़रा भी नहीं झुंझलाते और उन्हें एक न एक कहानी ज़रूर सुना देते। एक दिन उन्होंने उन लड़कों को यह कहानी सुनाई—

'किसी समय अजातशत्रु नाम का एक राजा राज करता था। वह बहुत अच्छा राजा था। कभी किसी पर गुस्सा नहीं करता। बदला लेना किस चिड़िया का नाम है, वह नहीं जानता था। हाँ, कभी कभी दुष्टों को डराने-धमकाने के लिए वह बनावटी गुस्सा ज़रूर दिखाता और उन्हें दण्ड भी देता।

एक दिन की बात है कि अजात-शत्रु दरबार में बैठा हुआ था। इतने में गुप्तचर लोग घबराए हुए दौड़े आए और बोले—'महाराज! बुरी खबर है!'

लेकिन अजातशत्रु चौंका भी नहीं। उसने धीरे से पूछा—'अच्छा! कहो, बात क्या है?'

'कलिङ्गराज हमारे देश पर चढ़ाई करने के लिए सेना सहित आ रहा है!' गुप्तचरों ने कहा।

तब अजातशत्रु ने सेनापति की ओर घूम कर कहा—'अब देरी किस बात की! सेना को कूच करने का हुक्म दो। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।' बस, राज-सभा भङ्ग हो गई।

थोड़ी ही देर में कूच का डङ्का बजने लगा। नगर का सारा दृश्य बदल गया। काम-काज छोड़ कर लोग हथियार बाँधने

राम शेखर

लगे। राजा की विशाल सेना कतार बाँध कर खड़ी हो गई।

अजातशत्रु भी घोड़े पर चढ़ कर आ पहुँचा! वह सेना को उस ओर ले चला जिधर से कलिङ्गराज आ रहा था। दूसरे दिन वे कलिङ्गराज की सेना के सामने आ खड़े हो गए। लड़ाई शुरू हो गई।

कलिङ्गराज की सेना संख्या में ज्यादा थी। लेकिन अजातशत्रु की बहादुरी देख कर उसके सिपाही बड़े जोश के साथ लड़ रहे थे। बड़ी घमासान लड़ाई हुई। अन्त में कलिङ्गराज हार गया और उसकी सेना तितर-बितर हो गई।

कलिङ्गराज ने सोचा था कि अजातशत्रु सीधा-सादा आदमी है; वह लड़ना क्या जाने! 'यथा राजा तथा प्रजा!' ऐसे राजा की सेना भी उसी की जैसी होगी!' लेकिन यहाँ आकर बेचारे को लेने के देने पड़ गए और निश्चित हो गया कि हार टाली नहीं जा सकती। वह घोड़े को मोड़ कर जान बचाने के लिए युद्ध-क्षेत्र से भाग चला। लेकिन अजातशत्रु के सैनिकों ने उसे भागते देख लिया। कुछ चुने हुए योद्धाओं ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लाकर महाराज के सामने पेश कर दिया।

कलिङ्गराज बड़ा बुरा आदमी था। उसने अजातशत्रु की सीमा-प्रान्त वाली जनता को बार-बार लूट-खसोट कर बर्बाद कर दिया था। गाँवों पर छापे मार कर घरों में आग लगा देता और बच्चे-बूढ़े-औरत जो भी सामने आते सब की हत्या कर डालता। किसी पर दया न दिखाता। इसीलिए, अजातशत्रु के दरबारी बहुत दिनों से कह रहे थे कि कलिङ्ग पर चढ़ाई करके कब्ज़ा कर लेना चाहिए। लेकिन अजातशत्रु को लड़ाई-झगड़े और खून बहाने में कोई

दिलचस्पी न थी। उसने अपने राज की सीमा पर रक्षा का प्रबन्ध कर दिया। पर कलिङ्ग राज पर चढ़ाई नहीं की। इस तरह बहुत उकसाने पर भी जब अजातशत्रु लड़ने को तैयार न हुआ तो कलिङ्गराज ने समझ लिया कि वह बुज़दिल है। उसने स्वयं चढ़ाई कर दी।

अजातशत्रु न कायर था, न कमज़ोर! वह दूसरे देशों पर चढ़ाई नहीं करना चाहता था। लेकिन अपने देश की रक्षा करने में कोई कसर नहीं रखता था। अवसर पाते ही उसने अपना जौहर दिखा दिया।

कलिङ्गराज उसके सामने बन्दी बन कर खड़ा-खड़ा सोचने लगा—'कितना मूर्ख हूँ मैं! मैंने इसकी भलमनसी को कमज़ोरी समझ लिया! कैसा धोखा खाया!'

अजातशत्रु के मन्त्री, सेनापति आदि ने उसे देख कर सोचा—'अच्छा हुआ! अब यह हमारी प्रजा को तङ्ग न करेगा।'

'महाराज! इस पापी को प्राण-दण्ड दिया जाए।' उन्होंने कहा। 'सिर्फ़ सिर काटने से काम न चलेगा! इसे तिल-तिल तड़पा-तड़पा कर मारना चाहिए!' दरबारियों ने एक स्वर से कहा। 'पहले इसकी दोनों आँखें निकाल कर इसे अन्धा बना दिया जाए!' सिपाही चिल्लाए। इस तरह सबने बदला लेने की इच्छा प्रकट की।

उनकी बातें सुन कर कलिङ्गराज का दिल दहल गया। 'मुझ पर कृपा कीजिए, महाराज! मेरा सिर कटवा लीजिए, तड़पा-तड़पा कर न मारिए!' उसने विनती की।

तब अजातशत्रु ने अपने सेनापति से कहा—'इसे छोड़ दो!'

यह सुन कर सब लोग अचरज में डूब गए। स्वयं कलिङ्गराज भी चकित हो गया। सेनापति सन्न रह गया। 'महाराज! आप इस हत्यारे को छोड़ देना चाहते हैं! ऐसे

काले साँपों को तो खोज-ढूँढ कर मरवा देना चाहिए और आप हाथ में आए शत्रु को छोड़ने का हुक्म दे रहे हैं ! इसने कितनी बार हमारी प्रजा को सताया है ! कितनी बार उन्हें लूटा-खसोटा है ! क्या यह इस घोर युद्ध और अपार रक्त-पात का कारण नहीं है ? फिर इसे क्यों छोड़ा जाए ?' उसने पूछा ।

अजातशत्रु ने धीरे से जवाब दिया—'यह तो ठीक है कि यह हमारा भारी दुश्मन है । इसीलिए तो हमने इससे युद्ध करके हराया है ! लेकिन अब यह मेरी दया माँगता है । शरणागत को कोई कष्ट न देना चाहिए । अब यह हमारा दुश्मन नहीं रहा ।' यह कह कर उसने जाकर अपने हाथों से कलिङ्गराज के बन्धन खोल दिए ।' यों वेमना ने कहानी खतम की । बच्चे सभी कहने लगे कि अजातशत्रु सचमुच बड़ा भला राजा था ।

इस पर वेमना ने कहा—'अच्छा ! तो अब एक दोहा भी सुन लो—

'जो तो को काँटे बुवै ताहि बोउ तू फूल !
तोहि फूल के फूल हैं वा को हैं तिरसूल ।'

इसके माने समझते हो ? अच्छा ! तो, सुन लो ! अगर कोई तुम्हारी बुराई भी करे तो तुम उसकी भलाई ही करो ! तुम समझोगे, इससे फायदा क्या हुआ ? वह हमेशा बुराई ही करता रहेगा ! लेकिन नहीं । क्योंकि जब तुम बुराई के बदले भलाई करोगे तो वह शर्मिंदा हो जाएगा और आगे से अपने को सुधार लेगा । जब तुम बुराई का बदला बुराई से ही दोगे तो फिर तुम्हारा बड़प्पन क्या रहा ? तुम भी तो उसी के जैसे बन गए !'

बच्चे सन्त वेमना का यह उपदेश सुनने के बाद खुशी-खुशी सोचते-विचारते घर चले गए ।

रंग बदला

एक गरीब लकड़हारा था। एक दिन वह लकड़ी काट लाने के लिए जङ्गल में गया। लकड़ियों का गट्ठर सिर पर लाद कर जब वह लौट रहा था, तो झाड़ी में छिपी कोई चीज उसे दिखाई दी। वह चीज काली थी और आबनूस के कुन्दे की तरह चमक रही थी। लकड़हारे ने पहले चुपचाप चला जाना चाहा। लेकिन मन न माना।

नज़दीक जाकर उसने देखा कि वह तो एक बच्चा है। बच्चा एकदम काला था। लेकिन उसके कालेपन में भी एक तरह की नज़ाकत थी। 'धन्य है भगवान की लीला!' लकड़हारे ने सोचा और उस बच्चे को उठा कर बड़े प्रेम से घर ले गया। उसके कोई बाल-बच्चे नहीं थे। इसलिए उसकी पत्नी ने भी सोचा कि यह बच्चा भगवान की देन है और वह बड़े प्रेम से उसे पालने लगी। बच्चे का कालापन दूर करने की चाह से लकड़हारे की स्त्री ने अनेकों लेप लगाए। अनेकों उबटन लगा कर उसे स्नान कराया। लेकिन बात उलटी हुई। बच्चे की कालिमा घटने के बदले और भी बढ़ती गई। आखिर उस लकड़हारे और उसकी स्त्री ने सोचा कि बच्चे का रङ्ग किसी शाप के कारण ऐसा हो गया है और उसे गोरा बनाने की चेष्टा करना व्यर्थ है।

दुनियाँ में बहुत से लोग काले-कलूटे होते हैं। यह तो ईश्वर की सृष्टि है। इसे कोई बुरा क्यों माने! लेकिन इस बच्चे के कालेपन में भी एक खासियत थी। यह बच्चा कोयले से और कौए से भी ज़्यादा काला था। इसको जो छूता था, उसके भी हाथ काले हो जाते थे। इसलिए कोई इसे अपने पास आने नहीं देता। इसके साथी सब 'ऐ कोयलेराम! दूर ही रहना!' कह कर इसकी दिल्लगी उड़ाया करते थे।

करुणा मोनन

आदमी आ रहा है। कालू ने उस आदमी को प्रणाम किया और तांगा रोक कर उसे अपनी कष्ट-कहानी कह सुनाई।

उस धनवान आदमी ने सब कुछ सुन कर कहा—'लड़के! तुम काले तो हो। इससे क्या होता है! तुम्हें इस तरह निठल्ला नहीं रहना चाहिए। आओ! मैं तुम्हें काम दूँगा। मेरे तांगे के पीछे खड़े हो जाओ और चिल्लाते चलो कि 'फलाने की सवारी आ रही है! रास्ते से हट जाओ! हट जाओ!' बड़े बड़े अमीर-उमराव जब निकलते हैं, तब इसी तरह पुकार मचाई जाती है। खाना-कपड़ा देकर मैं तुम्हें दस रुपया मासिक वेतन भी दूँगा। इस नौकरी में तुम्हें दूसरों से कोई वास्ता न रहेगा। तुम्हें कोई दिक्कत नहीं उठानी पड़ेगी।'

कालू मान गया और वह उसी क्षण से वह नौकरी करने लगा। वह उस अमीर के कहने के मुताबिक उसके तांगे के पीछे खड़ा होकर चिल्लाने लगा। एक दिन आसमान में काले बादल घिर आए और बड़े जोर की वर्षा हुई। कालू वर्षा में भीग गया और उसके बदन से काला रङ्ग धुल कर बहने लगा। इससे उसके मालिक

यहाँ तक कि होते-होते लकड़हारे और उसकी स्त्री को भी इससे घृणा होने लग गई। अब वे पहले की तरह इसे प्यार नहीं करते थे। पालने-पोसने वालों की यह हालत थी, तब फिर अन्य लोगों की बात ही क्या!

यों कालू मियाँ ने जब होश सम्हाला और देखा कि सब लोग उससे घृणा करते हैं और उसके साथी भी उसकी हँसी उड़ाते हैं तो उसे बहुत दुख होने लगा। उसने सोचा—'छिः! अब मैं यहाँ रह कर क्या करूँगा!' इसलिए एक दिन वह चुपके से घर से निकल गया। चलते-चलते उसने देखा कि तांगे पर पत्नी के साथ कोई अमीर

के कीमती कपड़े खराब हो गए। बस, अब तो धनवान को बहुत गुस्सा आया। उसने कहा—'अरे अभागे! तूने हमारे कपड़े खराब कर दिए! जा! तू इसी समय हमारे घर से चला जा!' यह कह कर उसने उसे निकाल दिया।

लेकिन धनवान की पत्नी को उस पर बिल्कुल गुस्सा नहीं आया। उसने एक नौकर को भेज कर उसे बुलाया और एक एकतारा और एक आइना देकर कहा—'बेटा! तुम यह एकतारा बजा कर गाना और अपनी जीविका चलाना। यह एकतारा कोई साधारण वस्तु नहीं है। इसे बजाने के लिए किसी से कुछ सीखने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि इससे अपने आप राग निकलता रहता है। इसको सुन कर लोग मुग्ध हो जाते हैं। कौन जाने, अगर तुम्हारी किस्मत अच्छी हुई तो इसकी कृपा से तुम्हारा रङ्ग भी बदल जा सकता है!' इस तरह आशीर्वाद देकर उसने उसे विदा किया।

काल वहाँ से खुशी-खुशी चला और एकतारा बजाते हुए देश-देश घूमने लगा। कुछ दिन बाद उसने एक बड़े राजा के राज में कदम रखा तो एक जगह लोगों की एक बड़ी भारी भीड़ उसे दिखाई दी। उस भीड़ के नज़दीक आकर पूछ-ताछ करने पर उसे मालूम हुआ कि उस देश की राजकुमारी का स्वयंवर होने वाला है। लोगों से मालूम हुआ कि 'यह राजकुमारी बड़ी अजीब लड़की है। जन्म से ही उसकी देह सोने की तरह जगमगाने लगी और वह जगमगाहट दिन-दिन बढ़ती गई। जब वह सयानी हुई और उसके स्वयंवर की घोषणा हुई तब से उसकी देह इस तरह जगमगाने लगी है कि देखने वालों की आँखों में चकाचौंध पैदा हो जाती है। इसीलिए लोग उसे 'सोने की रानी' कहते हैं।

लेकिन तेजस्विता के साथ साथ उस राजकुमारी का गर्व भी बढ़ता गया है। दूर-दूर से बहुत से सुन्दर राजकुमार उससे ब्याह करने आए; लेकिन उसने सबकी दिल्लगी उड़ाई और अपमानित करके भगा दिया। इसी से राजा-रानी अब सोच में पड़ गए हैं।' यह सब सुन कर कालू एकतारा बजाते हुए सड़क पर चलने लगा।

सहसा उस राजकुमारी की नज़र कालू पर पड़ गई। उसने उसे बुला लाने का हुक्म दिया। तुरन्त कालू राजकुमारी के सामने लाकर खड़ा कर दिया गया। राजकुमारी उसका गाना-बजाना सुन कर एकदम मुग्ध हो गई। लेकिन उसने जब उसका रङ्ग देखा तो उसे बहुत घृणा हो आई। उसने उस विचित्र युवक से पूछा कि तुम कौन हो! तब भोले-भाले कालू ने अपनी राम-कहानी कह सुनाई और अन्त में कहा—'एकतारे के प्रभाव से कुछ ही दिनों में मेरा यह काला रङ्ग दूर हो जाएगा। तब मैं भी एक सुन्दर राजकुमार बन जाऊँगा। बोलो, तब तुम मुझसे ब्याह करोगी न!' बेचारा कालू राजकुमारी के प्रेम में फँस गया था।

उसकी ये बातें सुनते ही वह गँवाली राजकुमारी ठठा कर हँस पड़ी और उसकी खिल्ली उड़ाने लगी—'कालू मियाँ! तुम्हें बीबी भी चाहिए!' यह देख कर चारों ओर जो दासियाँ खड़ी थीं, वे भी हँसी उड़ाने लगीं। यह देख कर कालू का मन बहुत दुखी हुआ और उसे गुस्सा हो आया। उसने कहा—'अगर मेरे इस एकतारे में कोई शक्ति हो तो इस राजकुमारी का गर्व टूट जाए!' इतना कह कर वह वहाँ से एकतारा बजाते हुए चला गया।

* * *

दो साल तक इसी तरह सारे देश में घूमते-फिरते कालू को अचानक उस आइने

की याद आ गई जो धनवान की पत्नी ने उसे दी थी। उसे अब तक उसकी याद ही न थी। उसके मन में कुतूहल पैदा हुआ और उसने आइना निकाल कर अपना मुख देखा! देखते ही वह आश्चर्य से उछल पड़ा। क्योंकि उस आइने में जो रूप दीखता था वह किसी दूसरे का जान पड़ता था। उसका वह काला रङ्ग गायब हो गया था। अब वह एक अत्यन्त रूपवान राजकुमार बन गया था। कैसा आश्चर्य!

इस परिवर्तन से चकित होकर काल अत्यन्त आह्लाद से देश में संचार करता रहा। बचपन से जो बात उसके मन में बैठ गई थी, उसके कारण वह अब भी अपने को काला ही समझता था। लेकिन अब कोई उसे 'काल' नहीं कहता था। उसके प्रति लोगों का व्यवहार भी बदल गया था। अब कोई उससे घृणा नहीं करता था। अब उसे देखते ही सब लोग अत्यन्त आदर से कहने लगते थे—'और एक गाना गाओ भाई!' अब उसे सब लोग बड़ा भारी गवैया समझते थे और उसकी प्रशंसा करते थे।

एक दिन काल एक सड़क से जा रहा था कि उसे एक जगह बड़ी भीड़ दिखाई दी। जाकर देखता क्या है कि वहां एक हाट लगी हुई है। जगह जगह तरह तरह के तमाशे हो रहे थे। उनमें सबसे अच्छा तमाशा तो था 'सोने की रानी।' काल एक के बाद एक तमाशा देखता 'सोने की रानी' के पास पहुंचा।

उसने अन्दर जाकर देखा कि सोने की तरह जगमगाने वाली एक युवती वहां खड़ी है। तब उसे शक हुआ। उसने चिल्ला कर कहा—'ज़रूर इसमें कुछ न कुछ धोखा है! इसका यह सुनहरा रङ्ग सहज है या इसने ऊपर से लगा लिया है! क्योंकि मेरी जानकारी में तो सारे संसार में एक ही

'सोने की रानी' है और वह....' वह यों और भी कुछ कहने जा रहा था कि सोने की रानी घबरा गई। उसने सोचा कि यह जरूर मेरा भण्डा-फोड़ कर देगा। इसलिए पूछा— 'आप कौन हैं?'

'लोग मुझे काल कहते हैं।' उसने कहा। सोने की रानी को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। उसने कहा—'क्या तुम्हीं काल हो! मुझे विश्वास नहीं होता!' यह कह कर वह उसकी तरफ गौर से देखने लगी। तब उसे मालूम हुआ कि रङ्ग बदल गया है, लेकिन सूरत वही है। यही काल है।

तुरन्त वह उसके पैरों पर गिर पड़ी और बोली—'मैं ही वह अभागी सोने की रानी हूँ। उस दिन जब मैंने तुम्हारा मखौल उड़ाया, तब से क्रमशः मेरा रङ्ग बदलता गया। सुनहरी चमक गायब हो गई और अन्त में मैं बिलकुल काली-कलूटी बन गई। सब लोग मुझे देख कर घृणा करने लगे। अन्त में मैं चुपके से घर से भाग निकली और सारे देश में घूमने लगी। राह में इन तमाशों के मालिक ने मुझे देखा और मेरे बदन पर सुनहरा रङ्ग पोत कर मुझे सबको दिखाना शुरू किया। मैंने तुम्हारा जो अपमान किया था, उसकी मुझे अच्छी सजा मिल गई। मेरा गर्व चूर-चूर हो गया। भगवान की कृपा से तुम मुझे फिर यहाँ मिले। अब कृपा करके अपना शाप लौटा लो।' यह कह कर वह बहुत गिड़गिड़ाने लगी।

काल का दिल पिघल गया। उसने अपना एकतारा बजा कर गाना शुरू किया। बस, तुरन्त राजकुमारी का पहले जैसा सुनहला रङ्ग हो गया। उसने काल से ब्याह कर लिया। अपने देश जाने के बाद सबने 'सोनेकी रानी' को पहचान लिया। लेकिन काल के बहुत कहने पर भी कि वही काल है, किसी ने उस पर विश्वास न किया।

किसी गाँव में एक आदमी रहता था जो लकड़ियाँ बेच कर रोज़ी चलाता था। वह बड़े तड़के उठता, जङ्गल जाता, शाम को लकड़ियों का गट्ठर सिर पर उठाए लौटता और बेच कर पैसे कमाता; यही उसका रोज़ का काम था। वह अपने काम में मशगूल रहता था। किसी बात में दखल नहीं देता था। एकदम साधु-स्वभाव का था। उसमें कोई बुरी आदत न थी। सब लोग उसको बड़ा ईमानदार समझते थे। कभी किसी को धोखा नहीं देता। इसलिए सब लोग कहते थे—'लकड़ियाँ तो इसी से खरीदनी चाहिए।'

यही कारण था कि वह लकड़हारा जो भी लकड़ियाँ लाता तुरन्त बिक जातीं। यों कड़ी मेहनत करके वह पेट पालता था और उसे इस दुनियाँ में किसी चीज़ की चिंता न थी।

उस लकड़हारे को रोज़ राजा के महल के सामने से गुज़रना पड़ता था। राजा अपने महल की ऊपरी मञ्जिल से रोज़ उसे आते-जाते देखा करता था। वह देखता था कि लकड़हारा उसको देख कर सिर नहीं झुका लेता, बल्कि उसकी ओर गौर से देखता है। हर रोज़ उसे इस तरह अपनी ओर नज़र गड़ा कर देखते देख कर राजा के मन में शक पैदा हो गया।

वह राजा बुरा आदमी नहीं था। बड़ा दयालु और गरीबों के दुख-सुख जानने वाला था। लेकिन रोज लकड़हारे को यों अपनी ओर देखते देख कर उसने सोचा कि वह ज़रूर कोई न कोई साजिश रच रहा है। इस तरह कुछ दिन बीत गए। धीरे-धीरे राजा के मन में यह बैठ गया कि लकड़हारा उसका गुप्त बैरी है। कुछ दिन बाद उसने सोचा कि इसे मरवा डालना चाहिए।

जगन्नाथ त्रिपाठी

लेकिन तुरन्त मन में विचार हुआ—'इस बेचारे ने मेरा क्या बिगाड़ा है ! फिर मैं नाहक इसकी जान क्यों लूँ !' लेकिन राजा के मन में लकड़हारे के प्रति वैर का भाव बना ही रहा। इसलिए वह दिन-दिन चिन्ता में घुलने लगा। वास्तव में उसे यों मन ही मन घुलने की कोई ज़रूरत न थी। क्योंकि वह चाहता तो उसे आज्ञा दे सकता था कि तुम इस रास्ते से मत आया-जाया करो ! फिर लकड़हारा उसे नहीं दिखाई देता और उसकी बला टल जाती। लेकिन राजा यह नहीं चाहता था। वह यह जानना चाहता था कि लकड़हारे के मन में कौन सा रहस्य छिपा हुआ है !

राजा को यों हमेशा चिन्तित रहते देख कर एक दिन मन्त्री ने इसका कारण पूछा। तब राजा ने सारा हाल कह सुनाया। मन्त्री को भी बहुत अचरज हुआ। उसने तुरन्त लकड़हारे का हाल-चाल जानने के लिए गुप्तचर नियुक्त कर दिए। इतना ही नहीं; उसने खुद चारों ओर पूछ-ताछ करना शुरू कर दिया। लेकिन सब लोगों का कहना था कि लकड़हारा बड़ा अच्छा आदमी है। वह बड़ा भोला-भाला है, खूब मेहनत करता है और कभी बेईमानी नहीं करता।' किसी ने उसके बारे में किसी तरह की बुरी बात नहीं बताई।

बहुत प्रयत्न करने पर भी मन्त्री को इसके सिवा और कुछ मालूम न हुआ। उसे अब डर भी लगने लगा कि राजा उसको निकम्मा कहेंगे और धिक्कारेंगे। आखिर एक रात वह चुपके से उठ कर लकड़हारे के घर गया। वह जानना चाहता था कि उसके घर में क्या है ! लेकिन उस बेचारे के घर में कुछ हाँड़ियों और लकड़ियों के कुछ गट्ठरों के अलावा और कुछ न था। कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसके लिए उसे दोष दिया जा सके।

सब कुछ देख-भाल कर लौटते वक्त मन्त्री ने बात चलाते हुए लकड़हारे से कहा—'क्यों भई! आज लकड़ियाँ नहीं बिकीं! गट्ठर यहाँ क्यों पड़े हैं!' 'बिकीं क्यों नहीं!' लकड़हारे ने धीमे से कहा। तब मन्त्री ने उन लकड़ी के गट्ठरों की तरफ इशारा किया। लकड़हारे ने कुछ बहाना बनाया। लेकिन मन्त्री ने फिर वही सवाल किया। आखिर बला न टलती देख कर लकड़हारे ने जवाब दिया—'मालिक! ये मामूली लकड़ियाँ नहीं हैं। चन्दन की लकड़ियाँ हैं।'

'तब तो और भी अच्छा है! अरे, तुम तो बिल्कुल बुद्धू जान पड़ते हो। चन्दन की लकड़ियाँ तो हाथों हाथ बिक जाएँगी!' मन्त्री ने हितू के तौर पर कहा। लेकिन उसकी बातें सुन कर लकड़हारा रोते हुए पैरों पर गिर पड़ा और माफी माँगने लगा। मन्त्री ने जब उसे अभय-दान दिया तो उसने कहा—'मालिक! मैं अपने मन की बात बताए देता हूँ। माफ कीजिएगा! महाराज बड़े दयालु हैं। गरीब सभी उन्हें बहुत चाहते हैं। मैं भी उन्हें बहुत चाहता हूँ। लेकिन गरीबी के मारे नाकों दम रहने की वजह से मेरे मन में एक बुरा ख्याल पैदा हुआ। मैंने सोचा कि महाराज बूढ़े हो गए हैं। अब और ज्यादा दिन तक न जिएँगे। जब वे स्वर्ग सिधार जाएँगे तो चन्दन की लकड़ियों की माँग बढ़ जाएगी और वे मँहगी हो जाएँगी। इसलिए अभी से चन्दन की लकड़ियाँ जमा कर रखूँगा तो उस समय खूब पैसे मिलेंगे।' उसकी बातें सुन कर मन्त्री निश्चेष्ट खड़ा रह गया। राजा ने जब मन्त्री से यह खबर सुनी तो उसने उस लकड़हारे को बुलवाया और उसे खूब धन-दौलत देकर विदा कर दिया। उसने सोचा कि यह इसीलिए रोज़ उस तरह मेरी ओर घूर कर देखता था।

हीरे मोती

हज़ारों साल पहले विंध्याचल के निकट एक राजा राज करता था। उसके दो लड़कियां थीं। एक का नाम था विमला और दूसरी का नाम था श्यामला। दोनों बड़ी सुन्दर लड़कियां थीं।

एक मुनि के आशीर्वाद से बचपन में ही उन दोनों में एक विचित्र शक्ति आ गई थी। विमला जब किसी कारण से हँस पड़ती थी तो उसके मुँह से हीरे झर पड़ते थे। श्यामला को कोई रुला देता था तो उसकी आँखों से मोती बरसने लगते थे।

अपनी लड़कियों की यह अद्भुत शक्ति देख कर राजा और रानी बहुत खुश रहते थे। उनको विश्वास था कि जब किसी कारण से ख़ज़ाना खाली हो जाएगा तो इन बेटियों के हँसने-रोने से ही बहुत से हीरे-मोती मिल जाएँगे और उन्हें धन-दौलत की कोई कमी न होगी।

हुआ भी वैसा ही। राजकुमारियों की अद्भुत शक्ति के भरोसे राजा ने राज्य का रुपया पानी की तरह बहाया और बात-की-बात में ख़ज़ाना खाली हो गया। लेकिन हीरे-मोती बटोरने की उनकी आशा झूठी साबित हुई। क्योंकि न विमला ही हँसती थी और न श्यामला ही रोती थी।

तरह-तरह की हँसी-मज़ाक की बातें सुनाने पर भी न कभी विमला के अधरों पर मुसकान पैदा होती थी, और न तरह-तरह की शोक-जनक, विषाद-भरी बातें सुनाने पर श्यामला की आँखें तरल ही होती थीं।

यह देख कर राजा की अक़्ल गुम हो गई। वह हैरान और परेशान हो गया। आखिर मन्त्री से सलाह-मशविरा करके उसने एक निश्चय किया।

दूसरे ही दिन उसने देश-विदेश में घोषणा करा दी—'जो कोई हमारी राज-

आनन्द कुमार भा

कुमारियों को याने विमला और श्यामला को हँसाए और रुलाएगा, उसको आधा राज दे दिया जाएगा और उन दोनों लड़कियों से ब्याह भी कर दिया जाएगा।' यही उस घोषणा का सारांश था।

अब दूर दूर से बहुत से राजकुमार लोग आने लगे। उन्होंने बड़ी चतुरता से कहानियां सुना कर विमला को हँसाना और श्यामला को रुलाना चाहा। लेकिन उनका सारा श्रम व्यर्थ हुआ।

उनकी कहानियां और चुटकुले सुन कर हँसते-हँसते आस-पास के लोगों के पेट में बल पड़ जाते थे; लेकिन विमला गुम-सुम बैठी रह जाती थी। जब विषाद-भरी कहानियां सुन कर सब लोग आँसू बहाने लगाते थे तो श्यामला मुसकुरा उठती थी।

इस तरह बहुत से राजकुमार आए और निराश होकर वापस लौट गए। राजा यह सब देख-सुन कर चिन्ता में घुलने लगा।

कुछ दिन बाद एक नौजवान राज-महल में आया। उसका नाम दिवाकर था। दिवाकर बड़ा ही चतुर युवक था।

राजकुमारी विमला ने उसे देखते ही कह दिया—'इन सब बेवकूफों को क्यों मेरे पास ले आते हो! ये लोग मुझे कभी नहीं हँसा सकते!' फिर भी राजा ने दिवाकर को राजकुमारी के पास बैठने का मौका दिया।

दिवाकर भी विमला को एक कहानी सुनाने लगा। लेकिन वह हास्य-जनक कहानी नहीं थी। शोक-जनक थी। यह देख कर सब लोग आश्चर्य करने लगे।

कहानी सुनते हुए सब लोग थोड़ी ही देर में शोक-मग्न हो गए और आँसू बहाने लगे। लेकिन राजकुमारी विमला एकाएक

खिलखिला पड़ी। बस, उसके मुँह से तरह-तरह के हीरे-जवाहर झर पड़े और कालीन पर ढेर के ढेर गिर कर चमकने लगे। अब तो लोगों के अचरज का कोई ठिकाना न रहा।

यह देख कर रानी ने झुक कर राजा के कान में कुछ कह दिया। राजा ने अपने मन्त्री को बुला कर धीमे स्वर में कहा—'इसमें कोई शक नहीं कि दिवाकर बड़ा ही चतुर युवक है। उसने बात की बात में विमला को हँसा दिया है। बाकी रह गया श्यामला को रुलाना। जब वह रो देगी तब मैं अपना वचन पूरा कर दूँगा।' जब यह बात दिवाकर को सुनाई गई, तब वह बिल्कुल निरुत्साहित नहीं हुआ। वह वहाँ से श्यामला के महल में गया। श्यामला अपनी सखियों के साथ आराम से बैठी हुई थी।

दिवाकर ने कहानी शुरू कर दी। और कहानी भी कैसी! इतनी हँसाने वाली कि मुरदा भी एक बार खिलखिला पड़े।

राजा-रानी और दूसरे लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो रहे थे। लेकिन राजकुमारी श्यामला एकाएक फूट-फूट कर रोने लगी। आँसू के तार बँध गए और एक एक आँसू की एक एक बूँद मोती बन कर कालीन पर लुढ़कने लगी।

यह देख कर सब लोग चकित रह गए। दिवाकर ने सोचा—'मैं अब आधे राज का मालिक हुआ और दोनों राजकुमारियाँ मुझे मिल गईं।' लेकिन इतने में राजा ने आगे झुक कर मन्त्री के कान में कुछ कह दिया।

मन्त्री ने आगे आकर ज़ोर से कहा—'इसमें कोई सन्देह नहीं कि दिवाकर बहुत ही बुद्धिमान है। लेकिन दोनों राजकुमारियों से ब्याह कर लेना हमारे कुलाचार के विरुद्ध है। इसलिए उसे चाहिए कि

जिस राजकुमारी से वह ब्याह करना चाहे उसे दूसरी राजकुमारी से ज्यादा रुला या हँसा कर, ज्यादा हीरे या मोती झड़ाए। जब वह इतना कर लेगा तो उसका ब्याह उस राजकुमारी से होगा जो ज्यादा हीरे या मोती झराएगी। राजा की घोषणा अवश्य पूरी की जाएगी।'

यह सुन कर दिवाकर को बहुत दुख हुआ। वह परी के से सुन्दर चमकीले बालों वाली विमला से ब्याह करना चाहता था। लेकिन राजा की इस नई शर्त के कारण मनोरथ की पूर्ति में रुकावट पड़ गई। उसे आशङ्का हुई। लेकिन उसने हार नहीं मानी।

अब विमला और श्यामला दोनों को अगल-बगल बिठाया गया। दिवाकर को ऐसी कहानी सुनानी थी जिसे सुन कर विमला हँसे और श्यामला रोए। इस तरह विमला को हँसाने से जो हीरे और श्यामला को रुलाने से जो मोती झड़ते, उन को गिनने के बाद जिनकी संख्या ज्यादा होती, उनको टपकाने वाली राजकुमारी से दिवाकर को ब्याह करना था। अब सब लोग बड़े चाव से देखने लगे कि इस होड़ का क्या नतीजा होता है।

दिवाकर ने कहानी शुरू कर दी—'एक घना जङ्गल था। उस जङ्गल में एक सुन्दर लड़की रहती थी। उसकी सौतेली माँ एक डाइन थी। वह उस लड़की को बहुत सताया करती थी।' इतना सुनते ही विमला खिलखिला कर हँसने लगी। हीरे झरने लगे। लोग उनको गिनने लगे। दिवाकर कहानी सुनाता ही जा रहा था—'एक बड़े ही सुन्दर और बलशाली राजकुमार ने उस लड़की को देखा और उस पर मुग्ध हो गया। दोनों सोचने लगे कि एक रात उठ कर घर से भाग चलें।' इतना सुनते ही श्यामला फूट फूट कर रोने

लगी। मोती झरने लगे और लोग उन्हें गिनने लगे।

इस तरह हँसाने और रुलाने वाली घटनाओं की खिचड़ी पकाते हुए दिवाकर कहानी सुनाता गया।

आधा घण्टा हो गया। कहानी खतम होने पर आई। उस समय तक की गिनती से मालूम हुआ कि विमला के हीरों से श्यामला के मोती ही दस ज्यादा हैं। यानी कहानी को विषादांत बनाने से विमला हँस कर उन मोतियों से ज्यादा हीरे झराती।

दिवाकर ने सोचा कि अब उसकी विजय निश्चित है। विमला उसी की होगी। लेकिन कहानी सुनाने में वह अपने आपको भूल गया था। वह यह भी भूल गया था कि कहानी को विषादांत बनाना है।

उसने सुध-बुध भूल कर यों कहानी खतम की—'सौतेली माँ के माया-जाल से बच कर राजकुमार और उस लड़की ने ब्याह कर लिया और सुख से जीवन बिताने लगे।'

यों कहानी का अन्त सुन कर श्यामला फूट-फूट कर रोने लगी। बहुत से मोती झर पड़े। कहानी के जोर में सुध-बुध भूल कर दिवाकर ने अपने पैरों पर आप ही कुल्हाड़ी मार ली थी।

आखिर श्यामला से ही दिवाकर का ब्याह हुआ। विमला से ब्याह न कर सकने के कारण उसे जो मलाल हुआ वह बहुत दिनों तक नहीं रहा। क्योंकि श्यामला कुछ कम सुन्दर तो थी नहीं। इसके अलावा श्यामला से ब्याह करने से ही उसको ज्यादा फायदा हुआ।

जैसा कि सब लोग जानते हैं, वैवाहिक जीवन में हँसने के मौके बहुत कम आते हैं और रोने के ज्यादा। इसलिए दिवाकर को बात-बात पर मोती मिलने लगे थे और यह भी एक तरह से अच्छा ही था।

पण्डित हरदयाल एक ज्योतिषी थे। वे लोगों का भाग्य बता कर जीविका चलाया करते थे। एक धनवान व्यक्ति ने भविष्य-वाणी सफल होने पर पण्डित जी को एक गाय दे दी थी। पण्डित जी गाय का दूध दुह लेते थे और चरने के लिए उसको गाँव में छोड़ दिया करते थे।

वह गाय रात को खेतों पर धावा बोलती थी और दिन में गाँव की सड़कों पर भटका करती थी। इससे कई लोगों को हानि पहुँचती थी। खास कर पण्डित जी के पड़ोसी तोतेराम गुरुजी को बहुत डर लगता था। क्योंकि उनके बहुत से बाल-बच्चे थे। जब जब वे गाय को देखते थे तब तब उनका दिल जोर से धड़कने लगता था।

गुरुजी ने पण्डित जी को कई बार समझाया कि आप गाय को यों न छोड़ दिया कीजिए। लेकिन पण्डित जी के कान पर जूँ तक न रेंगती थी। वे कह देते थे—'लड़कों को सड़क पर जाने की जरूरत ही क्या है! मैं गाय को बाँध कर नहीं रख सकता। आपके मन में जो आए कर लीजिए!'

तब गुरुजी ने निश्चय कर लिया कि पण्डित जी को एक पाठ पढ़ाना चाहिए। दूसरे दिन सबेरे ही उन्होंने अपने घर के सामने एक तख्ता टँगवा दिया। उस पर लिखा था—'अद्भुत ज्योतिष! निःशुल्क! बिलकुल खर्च नहीं! एक हिमालय-वासी योगी का अनोखा चमत्कार! उनकी आज्ञा है कि सबको निःशुल्क भाग्य-फल बताया जाए। ऐसा सुअवसर आपको फिर कभी नहीं मिलेगा! नकली ज्योतिषियों और पाखण्डी पण्डितों के धोखे में न आइए। समय—सबेरे ७ से ९ तक—शाम को ४ से ६ तक।'

जो लोग पण्डित हरदयाल के घर आकर चबूतरे पर बैठा करते थे उन सबको उस तख्ते ने तुरन्त आकर्षित किया। वे सब तोतेराम गुरूजी के यहाँ आने लगे। पण्डित जी के घर की तरह यहाँ देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ता था। वे सीधे गुरूजी के कमरे में जाकर आराम से बैठ कर गप-शप कर सकते थे। क्योंकि तोतेराम पण्डित की तरह क्रोधी आदमी न थे। इसके अलावा कुछ देना भी नहीं पड़ता था। लोगों ने सोचा—'गुरूजी कितने अच्छे आदमी हैं! उन्हें पैसे का लोभ बिल्कुल नहीं है।' अब कोई पण्डित जी के घर नहीं जाता था। उनके घर के सामने का चबूतरा बिल्कुल सूना पड़ा रहा करता था। कुछ लोग कहते थे—'अरे! उस पण्डित को कुछ आता-जाता नहीं। वह तो पेट पालने के लिए इतने दिन से ढोंग रच रहा था। सवाल का ठीक ठीक जवाब दे, तब न! उसकी जीविका ही है झूठी भविष्य-वाणी करके लोगों को ठग लेना!' इस तरह की बातें जब सारे गाँव में फैल गईं तो लोग पण्डित जी के घर का रास्ता ही भूल गए।

अब पण्डित जी बड़ी चिन्ता में पड़े। कुछ दिन यों ही बीत गए। पण्डित जी अब तो बहुत घबरा गए। आखिर एक रात वे चुपके से गुरूजी के घर गए और गिड़गिड़ा कर उनसे माफी माँगी। इसके पहले ही उन्होंने गाय को खूँटे से बाँध दिया था।

दूसरे दिन लोग रोज की तरह गुरूजी के घर आए। लेकिन वह तख्ता वहाँ से लापता था। लोग गुरूजी से सवाल-पर-सवाल करने लग गए। आखिर गुरू जी ने जवाब दिया—'सरकार का हुक्म है कि विद्यालय में अध्यापन करने वालों को यह सब काम नहीं करना चाहिए। इसलिए मैंने तख्ता हटा दिया है।'

चन्दामामा पहेली

बाएँ से दाएँ :

1. महादेव
4. पदार्थ
6. अपवाद
7. नवीन
8. दुख
10. एक फल
12. नामा
13. मक्खन
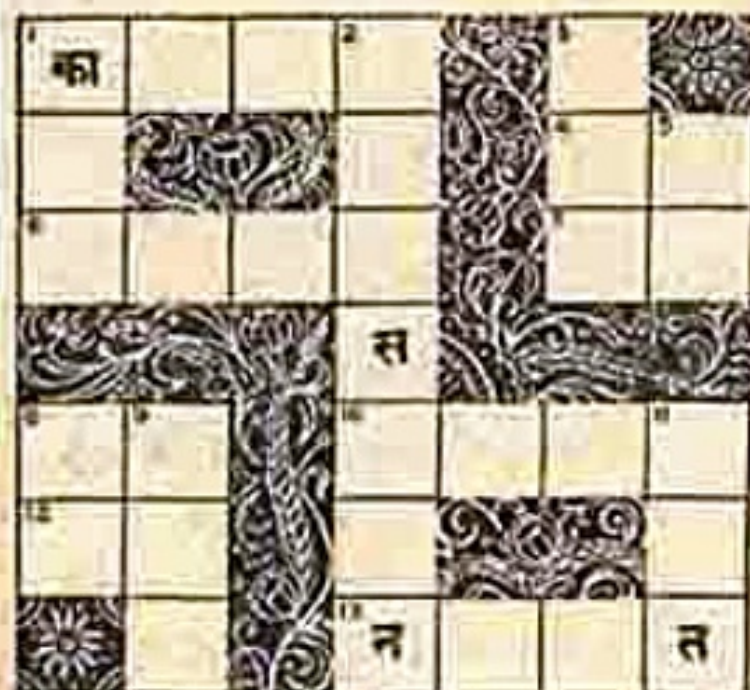
ऊपर से नीचे :

1. औरत
2. ईश्वर का एक नाम
3. जंगल
5. एक तीर्थ
8. छवि
9. सागर
11. सुन्दर

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अक्तूबर – प्रतियोगिता – फल

*

अक्तूबर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १०) का पुरस्कार मिलेगा।

परिचयोक्तियाँ :

पहला फ़ोटो : 'पानी की खोज में'
दूसरा फ़ोटो : 'दानी की खोज में'

प्रेषक : फणिभूषण सिन्हा, देहली

ये पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ प्रेषक के नाम सहित अक्तूबर के चन्दामामा में प्रकाशित होंगी। अक्तूबर के अङ्क के प्रकाशित होते ही पुरस्कार की रकम भेज दी जाएगी।

नवम्बर की प्रतियोगिता के लिए बगल के पृष्ठ में देखिए।

एक अनिवार्य सूचना :

परिचयोक्तियाँ सिर्फ़ कार्ड पर ही भेजी जानी चाहिए। कागज़ पर लिख कर, लिफ़ाफ़े के अन्दर रख कर भेजी जाने वाली परिचयोक्तियों पर कोई ध्यान न दिया जाएगा।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

नवम्बर १९५२ :: पारितोषक १०)

ऊपर के फोटो नवम्बर के अङ्क में छापे जाएँगे। इनके लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए।

१. परिचयोक्ति फोटो के उपयुक्त हो।

२. उसमें एक या तीन-चार शब्द से ज्यादा न हों।

३. सबसे प्रधान विषय यह है कि पहले और दूसरे फोटो की परिचयोक्तियों में परस्पर सम्बन्ध हो।

४. एक व्यक्ति परिचयोक्तियों की एक ही जोड़ी भेज सकता है।

५. परिचयोक्तियाँ, पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर लिख कर भेजनी चाहिए।

६. परिचयोक्तियाँ १५ सितम्बर के अन्दर हमें पहुँच जानी चाहिए। इसके बाद आने वाली परिचयोक्तियों की गिनती नहीं होगी।

७. प्राप्त परिचयोक्तियों की सर्वोत्तम जोड़ी के लिए १०) का पुरस्कार दिया जाएगा।

परिचयोक्तियाँ भेजने का पता:

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

चन्दामामा प्रकाशन

पोस्ट वडपलनी : मद्रास-२६

रङ्गीन चित्र-कथा, दूसरा चित्र

तुमने पिछले अङ्क में पढ़ा कि बादशाह ने अपने वज़ीरों को उस अजीब बुलबुल को पकड़ लाने की आज्ञा दे दी।

बादशाह की आज्ञा सुनते ही सबसे बूढ़ा वज़ीर जिसका नाम दादा था, दौड़ कर बाग में गया। नौकरों ने सारा बाग छान मारा; लेकिन उन्हें कहीं उस बुलबुल का पता न चला। अब तो दादा बहुत सोच में पड़ गया। आखिर किसी ने बता दिया कि बादशाह के रसोई-घर में काम करने वाली एक लौंडी को उस बुलबुल का पता है। यह सुन कर दादा तुरन्त दौड़ कर उस लौंडी के पास गया। जाकर उसने कहा—'बेटी! मुझे पता चला है कि तुम बादशाह के बगीचे में गाने वाली बुलबुल के रहने की जगह जानती हो। क्या तुम मुझे वह जगह दिखा नहीं दोगी? तुम जो माँगोगी सो दूँगा।' तब उस लौंडी ने कहा—'मुझे और तो कुछ नहीं चाहिए। हाँ, अगर आप एक बार बादशाह के दर्शन दिलाने का वादा कीजिएगा तो मैं आपको बुलबुल के रहने की जगह दिखा दूँ।' दादा ने झट उसकी बात मान ली। तब वह लौंडी वज़ीर को अपने साथ बगीचे में ले गई। जाते जाते वे बाग के एक कोने में पहुँच गए। वहाँ जाते ही उनसे कदम आगे न धरा गया। क्योंकि ऊपर पेड़ की घनी डालों में से बुलबुल का अमृत बरसाने वाला गाना सुनाई दे रहा था।

गाना ज्यों ही खतम हो गया, त्यों ही लौंडी ने बुलबुल के नजदीक जाकर पूछा—'क्यों बुलबुल रानी! हमारे मशहूर आलमगीर शहंशाह तुम्हारा गाना सुनना चाहते हैं। क्या तुम आज रात आकर उनके लिए नहीं गाओगी?' उसकी बात सुन कर बुलबुल ने भी आदमी की ज़बान में जवाब दिया—'इससे बढ़ कर और क्या चाहिए! मैं ज़रूर आकर बादशाह को अपना गाना सुनाऊँगी। मुझे तो बगीचे में गाना ही अच्छा लगता है। फिर भी कोई बात नहीं।' यह कह कर बुलबुल उड़ती हुई आई और लौंडी के कन्धे पर बैठ गई। लौंडी बुलबुल को बादशाह के सामने ले गई।

भानुमती

ताश का अजीब तमाशा

बाजीगर को चाहिए कि ताश की एक गड्डी ले आए, जिसमें तिरपन पत्तियाँ हों। तिरपनवीं पत्ती जोकर होगी। गड्डी को मिला कर दर्शकों से एक पत्ती चुन लेने को कहना चाहिए। उनकी चुनी हुई पत्ती को बिना देखे ताश की गड्डी के ऊपर रख देना चाहिए। फिर गड्डी को मिलाए बिना तीन-चार बार काट लेना चाहिए। फिर बाजीगर को कहना चाहिए— 'अरे! मैं तो भूल ही गया! इस तमाशे के लिए जोकर की जरूरत ही नहीं। उसे निकाल दूँ!' यह कह कर उसे जोकर को खोज-ढूँढ कर निकाल लेना चाहिए। फिर ताश की गड्डी को एक हाथ में लेकर एक-एक को गिन कर Y-O-U—H-A-V-E—S-E-L-E-C-T-E-D—T-H-I-S कहते हुए एक एक अक्षर के लिए एक एक पत्ती टेबुल पर रख देनी चाहिए। अन्त में S कहते वक्त जो पत्ती हाथ में आएगी उसको टेबिल पर रखते हुए दर्शकों की ओर देखना चाहिए, जिससे मालूम हो जाए कि उनकी चुनी हुई पत्ती वह नहीं है। फिर उन पत्तियों को सिलसिले से निकाल कर बाकी पत्तियों के ऊपर रख कर, एक एक कर गिन कर, S-O-R-C-A-R—P-L-E-A-S-E—S-A-Y—N-O-W कहते हुए एक एक अक्षर के लिए एक एक पत्ती टेबिल पर रखने पर अन्त के W नामक अक्षर वाली जो पत्ती होगी, वही दर्शकों की चुनी हुई पत्ती होगी। लो, अब इसका भेद सुनो— पहले ताश की गड्डी लाने पर जोकर को सबसे नीचे की पत्ती के ऊपर रखना चाहिए। याने जोकर के ऊपर इक्यावन पत्तियाँ

की पिटारी

होंगी और नीचे एक पत्ती। ताश की गड्डी को मिलाते वक्त ध्यान रखना होगा कि सबसे नीचे की दोनों पत्तियां जैसे की तैसी बनी रहें। बाकी पत्तियों को खूब मिला ले; कोई हर्ज नहीं। ऐसा मौका देना चाहिए जिससे दर्शक इन नीचे की दोनों पत्तियों के सिवा कोई भी पत्ती चुन ले। उसके बाद ताश को काट लेना चाहिए। मिलाना नहीं चाहिए। फिर दर्शकों से कहना चाहिए कि इस खेल के लिए जोकर की ज़रूरत नहीं और जोकर निकाल बाहर कर देना चाहिए। जोकर को जहाँ से निकाल दिया हो वहाँ से ताश के दो हिस्से करने चाहिए। फिर नीचे की पत्तियों को ऊपर रख देना चाहिए। याने दर्शकों की चुनी हुई पत्ती अपने आप ऊपर आ गई। उसके नीचे पचास पत्तियाँ हैं। ऊपर एक ही पत्ती है। बाजीगर को यह भी जानने की ज़रूरत नहीं कि वह कौन सी पत्ती है। पहले You Have Selected This कह कर पत्तियों को गिनने पर वह पत्ती सबसे नीचे आती है। 'गलती हो गई!' कह कर, दूसरी बार उस पत्ती को ऊपर रख कर, Sorcar, Please Say Now कहते हुए एक एक पत्ती को टेबिल पर रखने पर आखिर की ५ वाली पत्ती अवश्य ही दर्शकों की चुनी हुई होगी।

जो इस सम्बन्ध में प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेज़ी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मैजीशियन, १२/३ ए, गर्पार लेन,

बालीगंज : कलकत्ता - १९.

मैं कौन हूँ ?

*

मैं चार अक्षर वाला एक शब्द
हूँ, जिसका अर्थ होता है
'समान रस वाला'।

मेरा दूसरा अक्षर काट दोगे
तो अर्थ होगा – 'रस-सहित'।

मेरे पहले दोनों अक्षर काट
दोगे तो अर्थ होगा – 'सर'।

मेरे आखिरी दोनों अक्षर काट
दोगे तो अर्थ होगा – 'बराबर'।

मेरा आखिरी अक्षर मात्र काट
दोगे तो अर्थ होगा – 'युद्ध'।

मेरा दूसरा और चौथा अक्षर काट
दोगे तो अर्थ होगा – 'तालाब'।

मेरा पहला और चौथा अक्षर काट
दोगे तो मर ही जाऊँगा।

क्या तुम बता सकते
हो कि मैं कौन हूँ !

अगर न बता सको तो जवाब
के लिए ५२-वाँ पृष्ठ देखो।

बताओ तो ?

*

१. संसार का सबसे विशाल देश
कौन सा है !

(क) अमेरिका (ख) चीन (ग) रूस

२. भारतवर्ष का प्रथम गवर्नर
जनरल कौन था !

(क) क्लाइव (ख) वारेन हेस्टिंग्स
(ग) डलहौज़ी

३. सबसे बड़ा पंछी कौन सा है !

(क) शुतुरमुर्ग (ख) गीध (ग) जलमुर्गी

४. पद्मावत किसने लिखा !

(क) भूषण (ख) कबीर (ग) जायसी

५. संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान
कौन सा है !

(क) गोबी (ख) सहारा (ग) थार

६. बाष्प-यन्त्र का आविष्कार
किसने किया !

(क) एडीसन (ख) केली (ग) वाट

अगर न बता सको तो जवाब
के लिए ५२-वाँ पृष्ठ देखो।
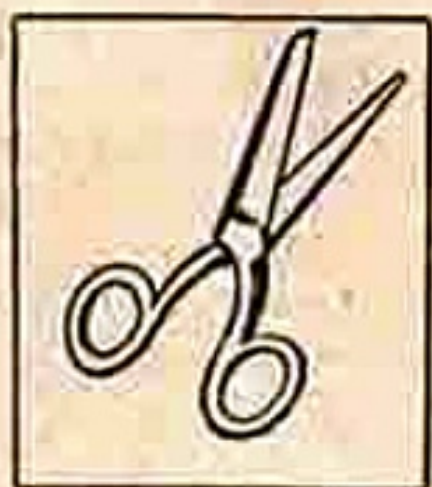
ऊपर नौ चित्र हैं। हरेक चित्र में हमारे चित्रकार ने एक-न-एक गलती कर दी है। क्या तुम बता सकते हो कि वे गलतियाँ कौन-कौन सी हैं? नहीं तो चन्दामामा के अगले अंक में देख कर जान लेना!

भाई-बहन

[श्री. 'अशोक' बी. ए.]

*

कितनी सुन्दर लगती देखो—
भाई और बहिन की जोड़ी !
इनकी सुन्दरता का वर्णन
है कर सका न कोई थोड़ी।

बहिन 'अन्नपूर्णा' है सुन्दर,
'अरुणकुमार' चाँद सा भाई।
रहते हैं हिल-मिल कर दोनों
खाते हैं नित दूध-मलाई।

बहिन 'अन्नपूर्णा' है सीधी,
पर है 'अरुण' बड़ा ही नटखट।
यहाँ-वहाँ की सारी चीजें
कर देता है वह उलट-पलट।

जो कुछ भी से मिल जाता है,
दोनों बाँट-बाँट कर खाते।
जरा-जरा सी बातों पर वे
कभी न रोते, धूम मचाते।

अपने अपने सभी खिलौने
एक साथ ले खेला करते।
टूट-फूट जाने पर दोनों
कभी न 'मैं-मैं-तू-तू' करते।

जब तक अजर-अमर हिम-आला,
जब तक हो गङ्गा की धार।
तब तक बना रहे इस जग में
भाई और बहिन का प्यार।

चन्दामामा पहेली का जवाब :

का	म	रि	पु		का	
नि			रु		न	ग
ति	लि	मे	ष		न	या
			स			
शो	क		ना	रि	य	ल
भा	ल		त			लि
	श		न	व	नी	त

'मैं कौन हूँ' का जवाब

'समरस'

'बताओ तो' का जवाब :

१. (ग) २. (ख)

३. (क) ४. (ग)

५. (ख) ६. (ग)

Photo by: Anant Desai

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

प्यार

प्रेषक :
मुरली मोहन पाण्डेय, पटना

रङ्गीन चित्र-कथा, चित्र – २